श्री ठकुराणीजीनो सिणगार

राग धनाश्री

अखंड सरूपनी अस्थिर आकारे, सोभा कहूं घणवे करीने सनेह।
जोई जोई वचन आंणूं कै ऊंचा, पण न आवे वाणी मांहें तेह।
सोभा सिणगार, स्यामाजीनो निरखूंजी।। १ ।।

मैं अपने मिटने वाले शरीर से, सदा सत सरूप श्री श्यामाजी के शृंगार की शोभा का बड़े प्रेम के साथ वर्णन करती हूं, परन्तु फिर भी एक जैसा शृंगार का वर्णन यहां की जिह्वा से करना आसान नहीं है, इसलिए मैं श्री श्यामाजी के शृंगार की शोभा को देखती हूं।

ए सोभा न आवे वाणी मांहें, पण साथ माटे कहेवाणी।
ए लीला साथना रुदेमां रमाडवा, तो में सबदमां आणी।। २ ।।

इस शृंगार की शोभा का वर्णन यहां की वाणी में करना सम्भव नहीं है, पर इसे सुन्दरसाथ के वास्ते कहा है, ताकि यह लीला सुन्दरसाथ के हृदय में बैठ जाए, इसलिए इसे शब्दों में पिरोया है। ऐसे अखण्ड स्वरूप को बार-बार देखकर जो ऊंचे-से-ऊंचे शब्दों का प्रयोग हो गया है, उसका वर्णन यहां के शब्दों से नहीं किया जा सकता।

चरण अंगूठा अति भला, पासे कोमल आंगलियो सार।
रंग तो अति रलियामणो दीसे, नख हीरा तणां झलकार।। ३ ।।

श्री श्यामाजी महारानी के चरण कमलों का अंगूठा अति सुन्दर है। लगती हुई उंगलियाँ भी अति कोमल और सुन्दर हैं। इनका रंग भी बड़ा लुभावना है। नाखून तो हीरे की तरह चमक रहे हैं।

हीरा ते पण तेहज भोमना, आ जिभ्या तिहां न पोहोंचाय।
आणी जिभ्याए जो न कहूं साथने, तो रुदे प्रकास केम थाय।। ४ ।।

हीरे की उपमा में भी योगमाया का हीरा समझना, संसार का मिटने वाला हीरा नहीं। यहां के शब्द वहां नहीं पहुंच सकते। इस जिह्वा से यदि न कहूं तो सुन्दरसाथ के हृदय में जानकारी कैसे आएगी?

फणा तो रंग पतंग छे, कांकसा नसो निरमल निरधार।
कूकम रंगे पानी सोभे, चरण तली वली सार।। ५ ।।

चरण के पंजे का रंग लाल है और उंगलियों के बीच की नसें अति निर्मल हैं। एड़ी का रंग लाल है और चरणों की तली और भी सुन्दर है।

लांक तो दीसे अति लेहेकतो, रेखा सोभित अति पायजी।
टांकण घूंटीने कांडा कोमल, पीडी ते वरणवी न जायजी।। ६ ।।

चरणों के नीचे की गहराई (लांक) अति झलक रही है और पैरों के नीचे की रेखाएं अति शोभायमान हो रही हैं। एड़ी के ऊपर का हिस्सा (टांकन), टांकन के पास में गोल घुण्डी (घूंटी) तथा पायल पहनने वाला भाग (काण्डा) नरम है तथा पिंडली का तो वर्णन करना आसान नहीं है।

कुन्दन केरा अनवट सोहे, विछुडा करे ठमकार।
माणक मोती ने नीला पाना, जुगते अति जडाव।। ७ ।।

अंगूठे की खरे सोने (कुन्दन) की मुद्रिका (मुन्दरी, अनवट) शोभायमान है तथा उंगलियों के बिछुए चलने पर बजते हैं। इनमें माणिक, मोती, नीलवी, पन्ना के नग भलीभांति जड़े हैं।

Nijanand App

कांबी कडला रणझण बाजे, घुंघरी तणां घमकार।
हेम तणां वाला मांहें गठिया, मांहें झांझर तणो झमकार।। ८ ।।

कान्बी (पायजेब), कड़ला, (चूड़ा, कड़ा) आपस में टकराते हैं तो रण-झण की आवाज आती है और घुंघरी की (जो तीसरा आभूषण है) आवाज घम-घम की आती है। वह घुंघरियां सोने के तार में बांधी गई हैं। इसी आवाज में चौथे आभूषण झांझरी की झन-झन की आवाज आती है।

कांबिए नंग आसमानी फूल वेल, जुगते कुन्दन जडाव।
जडाव लाल नंग नीला पीला, कडले सोभा अति थाए।। ९ ।।

कान्बी में फूल-बेल की तरह आसमानी रंग के नग अच्छे ढंग से सोने में जड़े हैं। लाल, नीले, पीले, नग कड़ले में जड़े होने से शोभायमान हो रहे हैं।

घूंघरडीनो घाट जुगतनो, कोरे करडा कुन्दन।
मांहें मोती फरतां दीसे, मध्य जडिया नीला नंग।। १० ।।

घुंघरी एक नए रूप से बनी है, जिसकी किनार पर सोने के दाने जड़े हैं। चारों ओर मोती जड़े हैं और बीच में नीला नग जड़ा है।

झांझरिया एक जुई जुगतना, कोरे लाल जडाव कांगरी।
एक हार बे हीरा तणी, बीजी मध्य दरपण रंग दोरी।। ११ ।।

झांझरी की बनावट भी एक अलग ढंग की है, जिसके किनारे पर कांगरी जैसे लाल नग जड़े हैं और एक हार दो हीरों की तथा दोनों हीरों के हार के बीच में दर्पण की तरह चमकती एक डोरी है।

भूखन चरणे सोभंता, अने बोलंता रसाल।
जुजवी जुगतना जवेर ज दीसे, करे ते अति झलकार।। १२ ।।

इस प्रकार के आभूषण चरणों में शोभा दे रहे हैं। इनमें से रसीली मनमोहक आवाज निकलती है। अलग-अलग किस्म के जवेर (जवाहरात) जड़े हैं जो बहुत ही झलक रहे हैं।

वस्तर केणी पेरे वरणवूं, ए तां सायर अति सरूप।
मारा जीवनी खेवना भाजवा, हूं तो कहूं गजा सारूं कूप।। १३ ।।

सागर के समान श्री श्यामाजी के स्वरूप के वस्त्रों का वर्णन किस तरह से करूं? मैं अपने मन की चाह मिटाने के लिए कुएं के समान छोटी सी बुद्धि से वर्णन करती हूं।

नीली ते लाहिनो चरणिया, अने मांहें कसवनी भांत।
कोरे कोरे कांगरी, इंद्रावती जुए करी खांत।। १४ ।।

नीले रंग के चमकदार कपड़े का लहंगा (घाघरा) है, जिसमें कसीदा किया गया है (भरत काम) तथा जिसके किनारे पर कांगरी बनी है। श्री इन्द्रावतीजी मन लगाकर देख रही हैं।

कांगरी केरी जुगत जोइए, दृढ करीने मन।
माणक मोती हीरा कुन्दन, नीला ते पाच रतन।। १५ ।।

कांगरी की बनावट को ध्यान से देखें तो माणिक, मोती, हीरा, नीलवी तथा पन्ना के नग सोने के तार में जड़े दिखाई देते हैं।

Nijanand App

भांत तो भली पेरे वरणवुं, मांहें वेल सुनेरी सार जी।
वस्तर समियल बणियल दीसे, नव सूझे कोए तार जी।। १६ ।।

कढ़ाई (भरत काम) का अच्छी तरह से वर्णन करती हूं। उसमें सुनहरी बेल शोभा देती है जो एक समान बनी है और कपड़े का धागा दिखाई नहीं देता।

अनेक विध ना फूलज दीसे, मांहें जवेर तणां झलकार जी।
नाडी तो अति सोभा धरे, जेमां रंग दीसे अग्यार जी।। १७ ।।

लहंगे की कढ़ाई में अनेक प्रकार के फूल बने हैं। फूलों की बनावट में जवेर (जवाहरात) झलक रहे हैं। ग्यारह रंग के धागे से नाड़ा (नाला) बना है, जो अति शोभायमान है।

नीलो पीलो सेत सेंदुरियो, मांहें कसवनी भांत जी।
स्याम गुलालियो अने केसरियो, मांहें जांबू ते रंगनी जात जी।। १८ ।।

नीला, पीला, सफेद, सेंदुरिया, काला, गुलाल, केसरिया, जाम्बू रंग का कसीदा किया है (भरत काम)।

जुगत एक वली जुई छे, ऊभी लाखी लिबोईनी दोर।
मानकदे दृढ करीने जुए, सोभित बंने कोर।। १९ ।।

नाड़े की बनावट में एक और शोभा दीखती है। लाखी और नीबू के रंग की खड़ी धाराएं शोभा देती हैं। "मानकदे" नाड़े के दोनों किनारे की शोभा को बड़ी गौर से देख रही हैं।

चीण चरणिए जोइए, मांहें वेल मोती झलकंत।
राती नीली चुन्नी कुन्दनमां, भली पेरे मांहें भलंत।। २० ।।

घाघरे की चुन्नट को देखो। उसमें मोतियों की बेल झलक रही है तथा लाल, नीले जवाहरात सोने में भली-भांति जड़े दीखते हैं, जैसे उसमें मिल ही गए हों।

ए ऊपर जे सोभा धरे, कांई तेहेनो न लाभे पार।
अंग चरणियो प्रगट दीसे, साडी मांहें सिणगार।। २१ ।।

घाघरे के ऊपर की शोभा अपरम्पार है। अंग के ऊपर पहना हुआ घाघरा साड़ी में से झलक रहा है।

छूटक छापा कुन्दन केरा, साडी सेंदुरिए रंग।
हीरा माणक मोती लसणिया, मध्य पांच वानिना नंग।। २२ ।।

सेंदुरिया रंग की साड़ी में अलग-अलग सोने की छपाई दिखाई देती है। हीरा, माणिक, मोती, लसनिया तथा बीच में पन्ना के नगों की बनावट शोभा दे रही है।

सोभा तो घणुए सोहामणी, जो दृढ करी जोइए मन।
झीणा वस्तर ने अति उत्तम, कानिए दोरी त्रण।। २३ ।।

मन को स्थिर करके (एकाग्रता) देखें तो यह शोभा अति लुभावनी है। साड़ी का कपड़ा बहुत बारीक और उत्तम है, जिसकी किनारी पर तीन डोरी की बनावट है।

मांहें मोती कोरे कसवी, त्रीजी नीली चुंनी सार।
अनेक विधनी वेल जो सोभे, छेडे करे झलकार।। २४ ।।

बीच में मोती, किनारे पर कसीदा, तीजी नीले रंग के दाने की शोभा है। साड़ी में अनेक प्रकार की बेलें शोभा देती हैं और साड़ी के पल्ले झलक रहे हैं।

Nijanand App

सुन्दर लांक सोहामणो, वांसो दीसे साडीमां अंग।
वेंण तले कंचुकीनी कसो, जुगते सोहे बंध।। २५ ।।

पीठ की गहराई (रीढ़ की हड्डी वाली जगह) की जगह साड़ी में से दिखाई दे रही है और चोटी के नीचे चोली के बन्ध बड़ी युक्ति से बंधे दिखाई देते हैं।

अंगनो रंग निरख्यो न जाय, क्यांहें न माय क्रण क्रांत।
पेट पांसा उर कंठ निरखतां, इंद्रावती पामे स्वांत।। २६ ।।

श्री श्यामाजी के अंग के रंग की किरणों की रोशनी देखी नहीं जा सकती (आंखें चकाचौंध हो जाती हैं)। श्री इन्द्रावतीजी पेट, पसलियां, सीना, कण्ठ को देखकर चैन पाती हैं।

अंगनो रंग अजवास धरे, तिहां स्याम चोली सोभावे।
सुन्दर सर्व सिणगार सोहावे, तिहां लेहेर भूखण क्रण आवे।। २७ ।।

श्री श्यामाजी के गौर रंग पर काले रंग की चोली अति शोभा देती है और सब शृंगार इतना सुन्दर है कि भूषणों की किरणें लहरा रही हैं।

कसकसती चोली ने कठण पयोधर, पीला खडपा सोभंत।
कस ठामे जे कांगरी, तिहां नीला जवेर झलकंत।। २८ ।।

काले रंग की चुस्त चोली (ब्लाऊज) पर पीले रंग के खडपे चुस्त स्तनों पर शोभा दे रहे हैं। पीठ पर जहां तनी लगी हैं, वहां नीले रंग के जवाहरात झलकते हैं।

भरत भली पेरे सोभित, कांई पचरंग चुन्नी सार।
अनेक विध ना फूल वेल, खुसबोए तणा वेहेकार।। २९ ।।

चोली के नीचे वाले हिस्से में जो भराव भरा है उसमें पांच रंग के नगों की तरह-तरह से चुन्नट शोभा देती है, जिसमें अनेक प्रकार की फूल-बेल हैं और उस फूल-बेल में से सुगन्ध आ रही है।

कंचुकी जडाव छे जुगत जुजवी, ऊपर आभ्रण भली भांत।
सुन्दर सरूप जोई जोईने, मारो जीव थाय निरांत।। ३० ।।

चोली के जड़ाव की युक्ति अति सुन्दर है और उसके ऊपर की ओढ़नी अच्छी तरह से ओढ़ी है। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि ऐसे सुन्दर स्वरूप को देख-देखकर मेरे जीव को करार मिलता है।

कंठ केणी पेरे वरणवु, मारा जीवने नथी कांई बल।
पांच हार तिहां प्रगट दीसे, सोभित दोरे वल।। ३१ ।।

श्री श्यामाजी के गले का वर्णन किस तरह करूं? मेरे जीव के अन्दर शक्ति नहीं है। गले में पांच हार सामने डोरियों से बंधे दिखाई देते हैं।

एक हार हीरा तणो, बीजो पाच वरण रतन।
त्रीजो हार मोती निरमल नो, कांई चौथो हेम कंचन।। ३२ ।।

एक हार हीरे का है, दूसरा हार हरे रंग के रत्न का है, तीसरा हार स्वच्छ मोतियों का है, चौथा हार शुद्ध सोने (कंचन) का है।

Nijanand App

हेम तणो हार जुई रे जुगत नो, नवसर नव पाटली।
जडाव हीरा पाच रतन मोती, मांहें माणक ने नीलवी।। ३३ ।।

पांचवां हार सोने का एक नए डिजाइन का है जो नौ लड़ियों का है, जिसमें जगह-जगह पर नौ पटलियां लगी हैं (रानी हार है)। उसमें हीरा, पाच, मोती, माणिक तथा नीलवी नग जड़े हैं।

उतरी त्रण सर सोभंती, कांई दोरो जडित अचंभ।
हूं केणी पेरे वरणवुं, मारी जिभ्या आणे अंग।। ३४ ।।

सबसे नीचे वाले उतरी हार में तीन लड़ें शोभा दे रही हैं। जिनकी डोरियों में अद्‌भुत जड़ाव है। मैं अपनी इस झूठी जुबान (नश्वर जिह्वा) से इसका कैसे वर्णन करूँ?

कंचुकी ना कांठला ऊपर कोरे, कांई दोरे तेज अपार।
सात रंगना नंग पाधरा, जोत करे झलकार।। ३५ ।।

चोली के गले की किनारी पर अनेक तेजोमयी डोरी बनी हैं, जिनमें सात रंग के नग जड़े हैं जो चमक रहे हैं।

मांहें मोती माणक हीरा, पाना ने पुखराज जी।
कुन्दन मांहें रतन नंग झलके, रमवा सुन्दरी करे साज जी।। ३६ ।।

चोली के गले की किनारी पर जो डोरियाँ हैं उनमें मोती, माणिक, हीरा, पन्ना, पुखराज के नग कुन्दन (सोने) में जड़े चमक रहे हैं। ऐसे शृंगार से खेलने के लिए श्री श्यामाजी शोभायमान हैं।

कांठले माणक ने वली मोती, कुन्दन मांहें पाना नंग।
चीड तणी चारे सर सोभें, कोई धात वसेकना रंग।। ३७ ।।

गले में जो चीड का हार चार लड़ियों का शोभा देता है, वह कोई विशेष ही धातु का बना है। उसके किनारे पर माणिक, मोती, पन्ना के नग सोने में जड़े हैं।

ए ऊपर वली निरखी ने जोइए, तो कंठसरी भली गई अंग।
कंठसरी केरी कली जुजवी, कांई जुजवा छे तेहेना नंग।। ३८ ।।

इस चीड के हार के ऊपर देखें तो कण्ठसरी (बिचौली) का हार गले से चिपका हुआ है। उसकी कलियां अलग-अलग बनी हैं और उनमें अनेक प्रकार के नग जड़े हैं।

कंठसरी जडाव जुगतनी, मांहें राती नीली जवेरो नी हार।
सकल सिणगार स्यामाजीने सोभे, कुन्दन मां मोती झलकार।। ३९ ।।

कण्ठसरी की कलियों के जड़ाव में लाल, नीले जवाहरातों की हार आई है तथा सोने के तार में मोती झलक रहा है। श्री श्यामाजी का ऐसा सम्पूर्ण शृंगार शोभायमान है।

नख थकी कर वरणवुं, एह जुगत अति सारजी।
आंगलियो अंगूठा कोमल, नख हीरा तणा झलकार जी।। ४० ।।

हाथ के नाखून से हाथ तक का वर्णन करती हूं जो अति उत्तम हैं। उंगलियों में अंगूठा कोमल है तथा नाखून हीरे की तरह झलक रहे हैं।

Nijanand App

झीणी रेखा हथेलिए दीसे, पोहोंचा सोभित पतंग जी।
आंगलिए वीसा वीस दीसे, कोमल कलाई अति रंग जी।।४१ ।।

हथेली में बारीक रेखाएं दिखाई देती हैं और पंजा (पोहोंचा) लाल रंग का शोभा देता है। पांचों उंगलियों के बीसों पोरे दिखाई पड़ते हैं। कोमल कलाई अच्छे रंग की है।

वीटी जडाव छे छ आंगलिए, सातमी अंगूठी अति सार जी।
आभलियोने फरतां पाना, दरपण मां मुख झलकार।।४२ ।।

छः उंगलियों में जड़ाव की अंगूठियां हैं। सातवीं अंगूठी अति शोभा ले रही है जिसमें शीशा जड़ा है। चारों ओर पन्ना के नग जड़े हैं। उसमें श्री श्यामाजी महारानी अपने मुखारबिन्द का शृंगार देखती हैं।

बे वीटी ने हीरा मोती, बीजी बे रंग बे रतन।
पांच रंगनी पाच एकने, एकने करडा कंचन।।४३ ।।

दो अंगूठी हीरा और मोती की हैं। दूसरी दो अलग दो रंगों के रत्नों की हैं। एक पाच की है। इस प्रकार पांच रंग हुए। एक सोने की जिसमें छोटे-छोटे दाने हैं, ऐसी बनी है।

पोहोंची ने नवघरी दीसे, ऊपर ऊंचा नंग।
माणक मोती पाना कुन्दन, ए सोभे पोहोंची ना नंग।।४४ ।।

पोहोंची और नवघरी कलाई में शोभायमान है जिनके ऊपर माणिक, मोती, पन्ना के नग सोने में जड़े हैं। यह नग पोहोंची में जड़े हैं।

नवघरी ने निरमल मोती, हीरा ने रतन।
कुन्दन मांहें पाना पुखराज, चूड मांहें नव रंग।।४५ ।।

नवघरी में सुन्दर मोती और हीरे जड़े हैं और नौ रंग की चूड़ियों में पन्ना और पुखराज के नग सोने में जड़े हैं।

नव रंगना नंग जुजवा, तेहेना ते जुजवा रूप।
हूं मारी बुध सारूं वरणवुं, पण एह छे अदभूत।।४६ ।।

नौ रंग की चूड़ियों में अलग-अलग तरह के नग जड़े हैं, जिनकी अलग-अलग बनावट है। यह अति विचित्र हैं, पर मैं तो अपनी आत्म दृष्टि से वर्णन कर रही हूं।

नीलवी ने लसणियां सोभित, पाना ने वली लाल।
माणक मोती ने हीरा कुन्दन, मांहें रतन तणां झलकार।।४७ ।।

नीलवी, लसनियां, पन्ना, लाल, माणिक, मोती, हीरा, कुन्दन में जड़े झलकते हैं।

कोणी आगल कांकणी, जांबू रंग नंग जडाव।
कुन्दन ना करकरियां सोभे, जोत करे अपार।।४८ ।।

कोहनी के ऊपर कंकनी पहनी है जिसमें जामुनी रंग के नग जड़े हैं तथा कुन्दन में दाना लगा है, जो बहुत चमक रहे हैं।

Nijanand App

मोहोलिए मोती ने वली कांगरी, नीली राती चुन्नी कुन्दन।
वेल मांहें हीरा हार दीसे, इंद्रावती जुए दृढ मन।।४९ ।।

कंकनी के मुख के ऊपर कंगूरे की बनावट में मोती जड़े हैं। नीले, लाल दाने सोने में शोभा देते हैं तथा हीरे के हार की बेल बनी है, जिसे श्री इन्द्रावतीजी ध्यान से देखती हैं।

सुंदरने सोभे एक जुगते, झण बाजे रसाल।
चूड केरा छापा अति सोभे, उर पर लटके माल।।५० ।।

चूड़ियों के ऊपर की छपाई की बनावट मनमोहक है। चूड़ियों के टकराव से निकलने वाले स्वर अति मधुर हैं। गले में माला शोभा दे रही है।

गाल तणो रंग कह्यो न जाय, अधुर परवाली नी भांत।
दंत सोभे रंग दाडिम नी कलियो, हरवटी अधुर वचे लांक।।५१ ।।

श्री श्यामाजी के गालो के रंग की शोभा का वर्णन नही हो सकता। होंठ मूंगे के रंग जैसे सुन्दर हैं। दांत अनार के दानों के रंग की कलियों की भांति हैं। होंठ और ठोडी के बीच की गहराई (लांक) शोभा देती है।

मुख चौक सोभित अति मांडनी, अने झलके काने झाल।
जडाव माणक मोती ने हीरा, कुन्दन मां पाना लाल।।५२ ।।

श्री श्यामाजी का मुखारबिन्द अत्यन्त सुन्दर है। कानों में झुमकियां लटक रही हैं जिसमें माणिक, मोती, हीरा, पन्ना तथा लाल नग सोने में जड़े हैं।

नासिका बेसर लाल मोती लटके, आंखडिए अंजन सोहे।
पापण चलवे ने पिउजीने पेखे, चतुराईए मन मोहे।।५३ ।।

नाक में बेसर (बुलाक) पहनी है, जिसमें लाल और मोती लटकते हैं। आंखों में काजल शोभा देता है। पलकों को चतुराई से चलाकर अपने धनी का मन मोहती हैं।

नेंणा चपल अति अणियाला, ने रेखा सोभे मांहें लाल।
बेहुगमा भ्रकुटीनी सोभा, टीलडी ते मध्य गुलाल।।५४ ।।

श्री श्यामाजी की आंखे मृगनयनी हैं, जिनमें लाल-लाल रेखाएं शोभा देती हैं। दोनों तरफ भौंहों की शोभा है, जिनके बीचोंबीच गुलाल की बिन्दी है।

मारा साथ सुणो एक वातडी, आ सरूप ते केम वरणवाय।
एक भूखण तणी जो भांत तमे जुओ, तो आणे देह जीव न खमाय।।५५ ।।

मेरे प्यारे सुन्दरसाथजी ! एक बात सुनो, इस स्वरूप की शोभा का वर्णन करना आसान नहीं है। शृंगार के एक ही भूषण को आप देखोगे तो शरीर से देखा नहीं जायेगा। (सहन नहीं करेगा)।

एक बेसर ऊपर लालज दीसे, ते लालक नो न लाभे पार।
जेटला मांहें मीट फरी वले, एटले दीसे झलकार।।५६ ।।

बेसर के ऊपर जो लाल लगा है, उस लाल की लालिमा की शोभा अपार है। जहां तक नजर जाती है, वहां तक उसी का तेज दिखाई देता है।

Nijanand App

खीटलडी जडाव भली पेरे, मांहें लाल हीरा सुचंग।
माणक मोती नीला पाना, मांहें पांच वानि ना नंग।।५७ ।।

नाक की खूंटी (कोका, कील, पुंगरिया, जड़) का जड़ाव सुन्दर है जिसमें लाल, हीरा, माणिक, मोती, नीलम, पन्ना तथा पांच तरह की बनावट के नग जड़े हैं।

करण लवने जे सोभा धरे, ऊपर साडी नी कोरे।
सणगटडा मांहें पिउजीने पेखे, आडी दृष्टें हेरे।।५८ ।।

कानों की झुमकी के ऊपर साड़ी का किनारा शोभा देता है और घूंघट में तिरछी नजर से धनी को देखती हैं।

निलवट वेणा चोकडो, पांच मोती तिहां सोभे।
लाल पाच कुन्दन मांहें सोभित, जोई जोईने जीव थोभे।।५९ ।।

माथे के ऊपर टीका (बेंदा) शोभा देता है, जिसमें पांच मोती शोभा देते हैं। लाल, हरा, सोने में जड़े हैं, जिसे देखते ही नजर वहीं टिक जाती है।

पटली सामी छ फूली सोभे, मध्य सेंदुरनी रेखे।
बेहू गमा मोती सर सोभे, इन्द्रावती खांत करी पेखे।।६० ।।

माथे पर जो पट्टी बंधी है, उसमें छः फूलों की बनावट है। मांग में सिंदूर की रेखा शोभायमान है। दोनों ओर मोतियों की लड़ियां शोभा देती हैं, जिनको श्री इन्द्रावतीजी अति चाहना से देखती हैं।

चार फूली ते फरती दीसे, बे फूली अणियाली।
मध्य लाल मोती फरतां पाना, ए जुगत क्यांहे न भाली।।६१ ।।

पटली के छः फूलों में से चार गोल बने हैं और दो नोंकदार हैं। इनके मध्य में लाल, मोती, पन्ना घेर कर आए हैं। ऐसी सुन्दर शोभा कहीं दिखाई नहीं दी।

राखडली मां रतन नंग झलके, हीरा पाना बेहू भांत।
माणक मोती फरतां दीसे, वेण चुए गूंथी अख्यात।।६२ ।।

राखडी (बीज) माथे के एक जेवर का नाम, में जड़े नग झलक रहे हैं। हीरा और पन्ना, माणिक, मोती घेर के आए हैं। चोटी को अति सुगन्धित तेल लगाकर गूंथा है।

पांच रंगना पांचे फुमक, सोहे मूल वेणनें बंध।
गोफणडे फुमक जे दीसे, तेहेनो स्याम कसवी रंग।।६३ ।।

चोटी में पांच रंग के पांच फुमक मूलबन्ध में शोभा देते हैं। चोटी के नीचे के भाग गोफण्डा (फुन्दरिया) में काला और लाल (कसबी) रंग के फुमक शोभा देते हैं।

गोफणडे घूंघरडी फरती, अने बोलंती रसाल।
फरता पाना दोरी बंध सोभे, वेण लेहेके जेम व्याल।।६४ ।।

गोफण्डा में घूंघरी लगी है जो मधुर आवाज करती है, उनमें पन्ना के नग एक लाइन में जड़े दिखाई देते हैं, चोटी सर्प की भांति हिलती (लहराती) है।

Nijanand App

मुख मांहें बीडी तंबोलनी, मंद मरकलडो सोभे।
इंद्रावती नेंणेसूं निरखे, अति घणूं करीने लोभे।। ६५ ।।

श्री श्यामाजी के मुखारबिन्द में पान का बीड़ा शोभा देता है, जिससे श्री श्यामाजी के मुस्कराने पर मुखारबिन्द के अन्दर की शोभा और सुन्दर हो जाती है। श्री इन्द्रावतीजी में अधिक प्यार से देखने की लालसा होती है।

मुखडूं निहाले अंगूठीमां, सोभा धरे सर्वा अंग।
सणगटडो सिणगार सोभावे, श्री कृष्णजी केरी अरधंग।। ६६ ।।

श्री श्यामाजी महारानी अपने सब अंगों की शोभा अगूंठी वाले दर्पण में देखती हैं। श्री कृष्णजी की अर्द्धांगनी के घूंघट की अत्यन्त शोभा है।

मुखथी वाणी जे ओचरे, कांई ए स्वर अति रसाल।
एक मात्र कणका जो रुदे आवे, तो थाय फेरो सुफल संसार।। ६७ ।।

श्री श्यामाजी अपने मुखारबिन्द से जो वचन कहती हैं वह अति रसीले होते हैं। उनमें से एक जरा (कण) मात्र भी हृदय में आ जाए तो जीवन सफल हो जाए।

सूच्छम सरूप ने उनमद अंगे, केणी पेरे ए वरणवाय।
मारी बुध सारूं हूं वरणवुं, इंद्रावती लागे पाय।। ६८ ।।

श्री श्यामाजी का (योगमाया वाला तन) सूक्ष्म तन मस्ती से भरा हुआ है, जिसका वर्णन कैसे हो? श्री इन्द्रावतीजी चरणों में लगकर अपनी आत्मा की शक्ति के अनुसार वर्णन करती हैं।

पांउं भरे एक भांतसूं, स्यामाजी सोभे एणी चाल।
जीव निरखीने नेत्र ठरे, इंद्रावती लिए रंग लाल।।। ६९ ।।

श्री श्यामाजी निराली लटकनी चाल से चलती हैं। जिस चाल को देखकर श्री इन्द्रावतीजी की आंखें ठर जाती हैं (तृप्त हो जाती हैं) और मन प्रसन्नता से भर जाता है।

ए सिणगार जोइए ज्यारे निरखी, त्यारे सूं करे मायानो पास।
साथ सकल तमे जो जो विचारी, वली स्यामा ते आव्या साख्यात।। ७० ।।

ऐसी खिंचावट वाले शृंगार को देखते ही माया कोसों दूर भागती है। हे सुन्दरसाथजी! तुम सब विचार करके देखो तो ऐसा लगेगा जैसे श्री श्यामाजी साक्षात् आ गई हैं।

सुन्दर सोभा स्यामाजी केरी, निरखी निरखी ने निरखूं जी।
अंतर टाली ने एक थया, इंद्रावती कहे हूं हरखूं जी।। ७१ ।।

श्री श्यामाजी के ऊपर कहे शृंगार की शोभा और सुन्दरता को टिक टिकी बांधकर देखती ही रहूं। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि इस स्वरूप को देखकर अन्तर आड़ा टल गया और हम एक हो गए जिससे मैं आत्म विभोर हो गई।

।। प्रकरण ।। ६ ।। चौपाई ।। २५५ ।।

Nijanand App